

रविवार 1 सितंबर, 2024

विषय — मसीह ईसा

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 10: 10

"मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।" — मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: मलाकी 3: 1-6

मलाकी 4: 2

- 1 देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।
- 2 परन्तु उसके आने के दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है।
- 3 वह रूपे का ताने वाला और शुद्ध करने वाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएंगे।
- 4 तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी, जैसी पहिले दिनों में और प्राचीनकाल में भावती थी॥
- 5 तब मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा॥
- 6 क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए।
- 2 परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 18: 15, 18

- 15 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 18 सो मैं उनके लिये उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उन को कह सुनाएगा।

2. जकर्याह 9: 9 (से 2nd ;)

- 9 हे सिय्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है।

3. यूहन्ना 3: 16, 17

- 16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

4. लूका 4: 14, 16-21

- 14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।
16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।
17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।
18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुआओं को छुड़ाऊं।
19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।
20 तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की आंख उस पर लगी थीं।
21 तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।

5. लूका 7: 11-16

- 11 थोड़े दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
- 12 जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे।
- 13 उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो।
- 14 तब उस ने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठाने वाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
- 15 तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां को सौंप दिया।
- 16 इस से सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है।

6. मरकुस 3: 1-6

- 1 और वह आराधनालय में फिर गया; और वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूख गया था।
- 2 और वे उस पर दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे हुए थे, कि देखें, वह सब्ब के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं।
- 3 उस ने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा; बीच में खड़ा हो।
- 4 और उन से कहा; क्या सब्ब के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना? पर वे चुप रहे।
- 5 और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास होकर, उन को क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा उस ने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया।
- 6 तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें॥

7. यूहन्ना 5: 17, 30, 43-46

- 17 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।
- 30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।
- 43 मैं अपने पिता के नाम से आया हूं, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे।
- 44 तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

- 45 यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगाने वाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है।
- 46 क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है।

8. यूहन्ना 6: 35, 37-40 (सं:)

- 35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।
- 37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।
- 38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।
- 39 और मेरे भेजने वाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं।
- 40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए।

9. प्रेरितों के काम 3: 19 (सं 2nd,), 20, 22, 26 (सं 3rd,)

- 19 इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ।
- 20 और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहिले ही से ठहराया गया है।
- 22 जैसा कि मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उस की सुनना।
- 26 परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को आशीष दे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 131: 26-13

यीशु के मिशन ने भविष्यवाणी की पुष्टि की, और पुराने समय के तथाकथित चमत्कारों को ईश्वरीय शक्ति के प्राकृतिक प्रदर्शनों, प्रदर्शनों के रूप में समझाया, जिन्हें समझा नहीं गया था। यीशु के कार्यों ने मसीहा पद पर उसके दावे को स्थापित किया। जॉन के प्रश्न के उत्तर में, "कि क्या आनेवाला तू ही है," यीशु ने सकारात्मक उत्तर दिया, अपने सिद्धांत का उल्लेख करने के बजाय अपने कार्यों का वर्णन किया, तथा विश्वास व्यक्त किया कि चंगा करने की दैवीय शक्ति का यह प्रदर्शन प्रश्न का पूर्ण उत्तर देगा। इसलिए उनका जवाब था: "कि जो कुछ तुम

सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।" दूसरे शब्दों में, उन्होंने उन सभी को अपना आशीर्वाद दिया जो इस बात से इनकार नहीं करेंगे कि दिव्य मन से आने वाले ऐसे प्रभाव, ईश्वर की एकता को सिद्ध करते हैं - वह दिव्य सिद्धांत जो सभी सद्भाव को सामने लाता है।

2. 109: 28-31

यीशु ने एक बार अपनी शिक्षाओं के विषय में कहा था: "कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है। यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं।" (यूहन्ना 7: 16,17.)

3. 147: 24-31

हमारे मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, ईसाई उपचार का अभ्यास किया, और अपने छात्रों को इसके दिव्य सिद्धांत की सामान्यताओं को सिखाया; लेकिन उन्होंने बीमारी को ठीक करने और रोकने के इस सिद्धांत को प्रदर्शित करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं छोड़ा। ईसाई विज्ञान में इस नियम की खोज की जानी बाकी थी। एक शुद्ध स्नेह अच्छाई में रूप लेता है, लेकिन विज्ञान केवल अच्छाई के दिव्य सिद्धांत को प्रकट करता है और इसके नियमों का प्रदर्शन करता है।

4. 26: 1-18, 28-32

जब हम यीशु को मानते हैं, और जो कुछ उन्होंने नश्वर के लिए किया, उसके लिए हृदय से आभार प्रकट करता है, — अपने प्यार के रास्ते को केवल महिमा के सिंहासन तक फैलाकर हमारे लिए रास्ता तलाश करने वाली व्यर्थ पीड़ा में, — फिर भी यीशु ने हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं दिया, अगर हम उसकी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करें; और सभी ने अपने प्रेम के प्रदर्शन के अनुपात में पीने के लिए दुःखद प्रयास किए, जब तक सभी दिव्य प्रेम के माध्यम से मुक्त नहीं हो जाते।

मसीह आत्मा था जिसे यीशु ने अपने बयानों में निहित किया था: "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं;" "मैं और पिता एक हैं।" यह मसीह, या यीशु की दिव्यता, उसकी दिव्य प्रकृति थी, जो उसे अनुप्राणित करती थी। ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

हमारे मास्टर ने कोई विचार, सिद्धांत या विश्वास नहीं सिखाया। यह सभी वास्तविक लोगों का दिव्य सिद्धांत था जो उन्होंने सिखाया और अभ्यास किया। ईसाई धर्म का उनका प्रमाण धर्म और पूजा का कोई रूप या प्रणाली नहीं था, लेकिन क्रिश्चियन साइंस, जो जीवन और प्रेम के सामंजस्य को दर्शाता है।

5. 40: 25-7

हमारे स्वर्गीय पिता, दिव्य प्रेम, मांग करते हैं कि सभी पुरुषों को हमारे गुरु और प्रेरितों के उदाहरण का पालन करना चाहिए न कि केवल उनके व्यक्तित्व की पूजा करनी चाहिए। यह दुखद है कि वाक्यांश ईश्वरीय सेवा आम तौर पर दैनिक कर्मों के बजाय सार्वजनिक पूजा का मतलब है।

ईसाई धर्म की प्रकृति शांतिपूर्ण और धन्य है, लेकिन राज्य में प्रवेश करने के लिए, आशा के लंगर को शकीना में सामग्री के घूँघट से परे डाल दिया जाना चाहिए जिसमें यीशु हमारे जाने से पहले चला गया है; और सामग्री से परे यह उन्नति धर्मियों की खुशियों और विजय के साथ-साथ उनके दुखों और कष्टों से भी होनी चाहिए। अपने गुरु की तरह, हमें भौतिक अर्थों में होने के आध्यात्मिक अर्थ से प्रस्थान करना चाहिए।

6. 256: 19 (कौन)-23

वह कौन है जो हमारी आज्ञाकारिता की मांग करता है? वह जो, धर्मग्रंथ की भाषा में, "स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोक कर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है?"

7. 184: 12-15

सत्य, जीवन और प्रेम ही मनुष्य पर एकमात्र वैध और शाश्वत मांग हैं, और वे आध्यात्मिक कानून निर्माता हैं, जो ईश्वरीय विधियों के माध्यम से आज्ञाकारिता को लागू करते हैं।

8. 37: 16-17, 22-25

यीशु के तथाकथित अनुयायी कब उसके सभी मार्गों में उसका अनुसरण करना और उसके महान कार्यों का अनुकरण करना सीखेंगे? ... यह संभव है, - हाँ, यह प्रत्येक बच्चे, पुरुष और महिला का कर्तव्य और विशेषाधिकार है, - कि उन्हें कुछ हद तक स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य और जीवन के प्रदर्शन द्वारा मास्टर के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

9. 337: 7-13

सच्ची खुशी के लिए, मनुष्य को अपने सिद्धांत, दिव्य प्रेम के साथ सामंजस्य करना चाहिए; पुत्र को पिता के अनुरूप होना चाहिए, मसीह के अनुरूप होना चाहिए। ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार, मनुष्य एक प्रकार से पूर्ण रूप में मन के रूप में है जो उसे बनाता है। मनुष्य होने का सत्य मनुष्य को सामंजस्यपूर्ण और अमर बनाता है, जबकि त्रुटि नश्वर और कलहकारी है।

10. 242: 30-3

दिव्य विज्ञान के चिन्ह हमारे गुरु के मार्ग को दर्शाते हैं, तथा ईसाइयों से मात्र दावे के स्थान पर उनके द्वारा दिए गए प्रमाण की अपेक्षा करते हैं। हम दुनिया से आध्यात्मिक अज्ञानता को छिपा सकते हैं, लेकिन हम अज्ञानता या पाखंड के माध्यम से आध्यात्मिक अच्छाई के विज्ञान और प्रदर्शन में कभी सफल नहीं हो सकते।

11. 243: 9-13

लेकिन भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के प्राचीन प्रदर्शनों की पुष्टि करने और उन्हें दोहराने के लिए उसी "मन ... जो मसीह यीशु में भी था" हमेशा विज्ञान के पत्र के साथ होना चाहिए।

12. 242: 9-14

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

13. 337: 14 (क्रिश्चियन)-19

क्रिश्चियन साइंस यह प्रदर्शित करता है कि कोई भी नहीं बल्कि हृदय में शुद्ध परमेश्वर को देख सकता है, जैसा कि सुसमाचार सिखाता है। उसकी शुद्धता के अनुपात में मनुष्य परिपूर्ण है; और पूर्णता आकाशीय होने का क्रम है जो जीवन को मसीह में प्रदर्शित करता है, जीवन का आध्यात्मिक आदर्श है।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एंड्री द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6